प्रश्न–पत्र ब्लूप्रिन्ट
BLUE PRINT OF QUESTION PAPER
परीक्षा : हायर सेकण्डरी

कक्षा :– XI **पूर्णांक :– 100**

विषय :– समाज शास्त्र **समय : 3 घण्टे**

स. क्र.	इकाई	इकाई पर आवंटित अंक	वस्तुनिष्ठ प्रश्न	अंकवार प्रश्नों की संख्या			कुल प्रश्न
			1 अंक	4 अंक	5 अंक	6 अंक	
1.	समाजशास्त्र व अनुशासन	10	1	1	1	–	2
2.	प्रारंभिक अवधारणाएं	10	4	–	–	1	1
3.	सामाजिक संस्थाएं	10	1	1	1	–	2
4.	संस्कृति, व्यक्तित्व और समाज	10	1	1	1	–	2
5.	शोध की प्रविधियाँ और तथ्य संकलन की तकनीक समाज को समझना	10	4	–	–	1	1
6.	सामाजिक संरचना व स्तरीकरण	10	5	–	1	–	1
7.	सामाजिक प्रक्रियाएं व सामाजिक परिवर्तन	10	2	2	–	–	2
8.	सामाजिक परिस्थितिकी	10	1	1	1	–	2
9.	कार्ल मार्क्स, मैक्स वेबर और इमाइल दुर्खीम का योगदान	10	1	1	1	–	2
10.	जी.एस. धुरिये, डी.पी. मुखर्जी, राधा कमल मुखर्जी और बी. के. सरकार का योगदान	10	5	–	1	–	1
	योग =	**100**	**(25)=5**	**07**	**07**	**02**	**16+5 =21**

निर्देश :–

1. प्रश्न क्रमांक 1 से 5 तक वस्तुनिष्ठ प्रश्न होगें जिसके अन्तर्गत रिक्त स्थानों की पूर्ति, एक शब्द में उत्तर, मेचिंग, सही विकल्प तथा सत्य असत्य का चयन आदि के प्रश्न होगें। प्रत्येक प्रश्न में 5 अंक निर्धारित है।
2. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर सभी प्रश्नों में विकल्प का प्रावधान रखा जाये। यह विकल्प समान इकाई से तथा यथा संभव समान कठिनाई स्तर वाले होने चाहिए।
3. कठिनाई स्तर – 40% सरल प्रश्न, 45% सामान्य प्रश्न, 15% कठिन प्रश्न

आदर्श प्रश्न-पत्र

विषय - समाज शास्त्र

कक्षा – XI

समय : 3 घण्टे **पूर्णांक–100**

निर्देश :–

(1) सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

(2) प्रश्नों के उत्तर सटीक होने चाहिए।

(3) प्रश्न क्रमांक 1 से 5 वस्तुनिष्ठ प्रश्न है। प्रत्येक प्रश्न के लिए **5 अंक** निर्धारित है।

(4) वस्तुनिष्ठ प्रश्नों को छोड़कर सभी प्रश्नों में आन्तरिक विकल्प दिये गये है।

(5) प्रश्न क्रमांक 6 से 12 तक के लिए **4 अंक** निर्धारित है।

(6) प्रश्न क्रमांक 13 से 19 तक के लिए **5 अंक** निर्धारित है।

(7) प्रश्न क्रमांक 20 से 21 के लिए **6 अंक** निर्धारित है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न–

प्रश्न 1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए :–

i) समाज शास्त्र का जनक .... कहा जाता है।

ii) समाज .... है।

iii) प्राथमिक समूह आकार में बहुत .... होते है।

iv) पद्धति वह व्यवस्थित ढंग है जिसके द्वारा कोई .... अध्ययन किया जाता है।

v) जाति एक .... वर्ग है।

प्रश्न 2. निम्नलिखित प्रश्नों के चार सम्भावित उत्तर दिए गये हैं इनमें से सही उत्तर चुनकर अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखिए।

(1) सर्व शिक्षा अभियान द्वारा अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा की व्यवस्था कितने वर्ष तक के विद्यार्थियों के लिए की गयी है।

i) 14 वर्ष
ii) 10 वर्ष
iii) 20 वर्ष
iv) 25 वर्ष

(2) ''आत्महत्या'' पुस्तक के लेखक थे –

i) कार्ल मार्क्स
ii) मैक्स वेबर
iii) इमाइल दुर्खीम
iv) जी. एस. धुरिये

(3) महानगर कहा जाता है, जिनकी जनसंख्या –

i) 5 लाख

ii) 8 लाख

iii) 9 लाख

iv) 10 लाख से अधिक

(4) ''मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है।'' यह कथन है –

i) एम. डी. जॉनसन का

ii) अरस्तू का

iii) बोगार्डस का

iv) ऑगबर्न का

(5) भारत में मुगल शासन काल में अल्पसंख्यक माना गया –

i) हिन्दुओं को

ii) मुसलमानों को

iii) ईसाईयों को

iv) अंग्रेजो को

प्रश्न 3. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर एक शब्द में दीजिए –

1. सामाजिक परिवर्तन को व्यक्तियों के कार्य करने और विचार करने के तरीकों में होने वाला परिवर्तन कहकर परिभाषित किया जा सकता है। यह परिभाषा **किसके** द्वारा दी गई है ?
2. सांस्कृतिक विलम्बना की अवधारणा **किसने** प्रस्तुत की ?
3. नातेदारी, सामाजिक स्तरीकरण, शक्ति व्यवस्था आदि सामाजिक संरचना **किस** स्वरूप के तत्व है ?
4. जब एक वर्ग पूरी तरह आनुवंशिकता पर आधारित होता है तब हम उसे क्या कहते हैं?
5. मनुष्य जिन विभिन्न विश्वासों, प्रथाओं, परम्पराओं और शिष्टाचार के तरीकों में जीवन व्यतीत करता है उन सभी से **किस** संस्कृति का निर्माण होता है ?

प्रश्न 4. सत्य असत्य लिखिए –

1. परिवार, नातेदारी – समूह जाति, **रक्त संबंधी समूह** है।
2. किसी तथ्य को बातचीत के द्वारा समझने के स्थान पर स्वयं अपनी गहन दृष्टि से समझने की प्रक्रिया का नाम **प्रश्नावली** है।
3. **अवलोकन** बहुत से प्रश्नों की सूची है जिसमें अध्ययन – विषय के विभिन्न पक्षों से संबंधित विभिन्न प्रकार के प्रश्न शामिल होते है।

4. प्रकार्यात्मक पद्धति को समझने के लिए पहले **कार्य** शब्द के अर्थ को समझाना जरूरी है।

5. शक्ति और अधिकारों के असमान सामाजिक विभाजन को हम सामाजिक **स्तरीकरण** कहते है।

प्रश्न 5. जोड़ी बनाइए –

(1)	जी एस. धुरये	सन् 1894
(2)	डी. पी. मुकर्जी	12 दिसम्बर, 1893
(3)	राधाकमल मुकर्जी	26 दिसम्बर सन् 1887
(4)	विनय कुमार सरकार	सन् 1952
(5)	इण्डियन सोशियोलॉजिकल सोसायटी	7 दिसम्बर सन् 1889

प्रश्न 6. भारत में समाज शास्त्र के अध्ययन के कोई चार लाभ लिखि।

अथवा

समाज शास्त्र के आराम्भिक विकास से संबंधित किन्ही चार समाज शास्त्रियों के नाम लिखिए।

प्रश्न 7. परिवार की परिभाषा दीजिए तथा परिवार की मुख्य विशेषताओं का वर्णन कीजिए ?

अथवा

विवाह की परिभाषा दीजिए तथा विवाह के प्रमुख उद्देश्यों का वर्णन कीजिए ?

प्रश्न 8. संस्कृति के अर्थ तथा प्रकारों की विवेचना कीजिए।

अथवा

संस्कृति तथा पर्यावरण के संबंध को समझाइए।

प्रश्न 9. प्रतिस्पर्द्धा के मुख्य प्रकारों को संक्षेप में समझाइए।

अथवा

संघर्ष की किन्हीं चार विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 10. जनसंख्या – वृद्धि किस तरह सामाजिक परिवर्तन को प्रोत्साहन देती है।

अथवा

क्रान्ति और प्रगति में क्या अन्तर है ?

प्रश्न 11. पर्यावरण के अर्थ को समझाइए ?

अथवा

पर्यावरण के आधार पर गाँव और नगर की तुलना कीजिए ?

प्रश्न 12. पूँजीवादी व्यवस्था की प्रमुख विशेषताएँ क्या हैं ?

अथवा

पूँजीवादी व्यवस्था में वर्ग – संघर्ष क्यों उत्पन्न होता है ?

प्रश्न 13. समाजशास्त्र का राजनीति शास्त्र से संबंध स्पष्ट कीजिए।

अथवा

समाजशास्त्र तथा अर्थशास्त्र किस प्रकार एक दूसरे से संबंधित हैं ?

प्रश्न 14. आर्थिक संस्थाएँ किस तरह अर्थव्यवस्था के रूप का निर्धारण करती हैं ?

अथवा

सरकार से आप क्या समझते हैं ? सरकार के कार्यों की संक्षेप में विवेचना कीजिए।

प्रश्न 15. समाजीकरण के मुख्य सिद्धान्तों की संक्षेप में विवेचना कीजिए।

अथवा

व्यक्तित्व–निर्माण के सांस्कृतिक कारक कौन – से हैं ?

प्रश्न 16. सामाजिक संरचना को परिभाषित कीजिए तथा इसकी मुख्य विशेषताओं को समझाइए।

अथवा

नृजातिकी के अर्थ तथा स्तरीकरण से इसके संबंध की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 17. सामाजिक पारिस्थितिकी क्या है ? इसके प्रमुख तत्वों की विवेचना कीजिए।

अथवा

औद्योगिक नगर तथा महानगर के अर्थ और विशेषताओं की विवेचना कीजिए।

प्रश्न 18. समाजशास्त्र के लिए मैक्स वेबर के योगदान की संक्षेप में विवेचना कीजिए।

अथवा

समाजशास्त्र के लिए दुर्खीम के योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

प्रश्न 19. धुरये के अनुसार जाति व्यवस्था की विशेषताएँ क्या हैं ?

अथवा

परम्परा के बारे में डी.पी. मुकर्जी के विचार क्या हैं ?

प्रश्न 20. प्राथमिक समूह से आप क्या समझते है ? प्राथमिक और द्वितीयक समूह में अन्तर स्पष्ट कीजिए।

अथवा

संस्कृति को परिभाषित कीजिए तथा सामाजिक जीवन में संस्कृति की भूमिका को समझाइए।

प्रश्न 21. प्रश्नावली के प्रमुख प्रकार कौनसे है ? विवेचना कीजिए।

अथवा

अवलोकन के मुख्य प्रकार क्या हैं ? विवेचना कीजिए।

मॉडल उत्तर

विषय - समाज शास्त्र

कक्षा – XI

प्रश्न 1. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए –

उत्तर
(1) ऑगस्त कॉम्ट
(2) अमूर्त
(3) छोटे
(4) वैज्ञानिक
(5) बन्द

प्रश्न 2. सही विकल्प चुनकर लिखिए –

उत्तर
(1) 14 वर्ष
(2) इमाइल दुर्खीम
(3) 10 लाख से अधिक
(4) अरस्तू
(5) मुसलमानों को

प्रश्न 3. एक शब्द में उत्तर –

उत्तर
(1) एम. डी. जॉनसन
(2) ऑगबर्न
(3) संरचनात्मक
(4) जाति
(5) अभौतिक

प्रश्न 4. सत्य असत्य –

उत्तर
(1) सत्य
(2) असत्य
(3) असत्य
(4) सत्य
(5) सत्य

प्रश्न 5. जोड़ी बनाइए –

उत्तर

	'अ'	'ब'
(1)	जी एस. धुरये	12 दिसम्बर सन, 1893
(2)	डी. पी. मुकर्जी	सन् 1894
(3)	राधाकमल मुकर्जी	7 दिसम्बर सन् 1889
(4)	विनय कुमार सरकार	26 दिसम्बर सन् 1887
(5)	इण्डियन सोशियोलॉजिकल सोसायटी	सन् 1952

उत्तर 6. समाजशास्त्र इतना महत्वपूर्ण विषय है यह पूरे सामाजिक जीवन को समझने में हमारी सहायता करता है। समाजशास्त्र ने सामाजिक ज्ञान के विकास और समाज को संगठित बनाने के क्षेत्र में जो योगदान किया है इसके लाभ निम्नलिखित है।

(1) मानव व्यवहारों का समुचित ज्ञान –

समाजशास्त्र हमें उन नियमों से परिचित कराता है, जो हमारे सामाजिक व्यवहारों को प्रभावित करते हैं इन्हीं की सहायता से विभिन्न समूहों के आपसी विभेदों को कम करके सहयोग को प्रोत्साहन दिया जा सकता है।

(2) सामाजिक समस्याओं को समझने में सहायक –

भारतीय समाज में आज अनेक गम्भीर समस्याएँ मौजूद है। जातिवाद, क्षेत्रवाद, धार्मिक तनाव, परिवारिक विघटन, अपराध नैतिकता का गिरता हुआ स्तर कुछ ऐसी समस्याएँ है उन समस्याओं का समाधान आर्थिक अथवा राजनीतिक आधार पर नहीं किया जा सकता। समाजशास्त्रीय अध्ययनों के द्वारा ही इनके मूल कारणों को समझकर व्यावहारिक नीतियाँ बनाना सम्भव है।

(3) भावात्मक एकीकरण का आधार –

भावात्मक एकीकरण उन समाजों के लिए सबसे अधिक जरूरी है जिनमें एक दूसरे से अलग धर्मों संस्कृतियों, प्रजातियों, विश्वासों मनोवृत्तियों और रूचियों वाले लोग साथ–साथ रहते है। समाजशास्त्र अपने अध्ययनों के द्वारा विभिन्न धर्मों, संस्कृतियों और प्रजातियों की एकता सम्बन्धी विशेषताओं को स्पष्ट करता है इससे सभी समूहों को एक–दूसरे के निकट आने का अवसर मिलता है। समाज के प्रति एक तार्किक और निष्पक्ष दृष्टिकोण के द्वारा भी यह भावनात्मक एकीकरण को बढ़ाता है।

(4) पारिवारिक संगठन के लिए महत्वपूर्ण –

वर्तमान युग में हमारे जीवन की एक प्रमुख समस्या पारिवारिक जीवन में बढ़ते हुए तनाव और परिवारों का विघटन होना है सभी समाजों की तरह भारत में भी विवाह–विच्छेद की बढ़ती हुई दर बच्चों के पालन–पोषण सम्बन्धी कठिनाइयों पति–पत्नी के बीच तनाव, परिवार में वृद्ध सदस्यों की उपेक्षा, युवा पीढ़ी की बढ़ती हुई निरंकुशता तथा पारिवारिक असुरक्षा आज पारिवारिक जीवन की प्रमुख समस्याएँ है।

अथवा

उत्तर समाजशास्त्र के आरम्भिक विकास से संबंधित अमरीका में सर्वप्रथम सन 1876, में येल विश्वविद्यालय में सबसे पहले एक अलग विषय के रूप में समाजशास्त्र का अध्ययन–अध्यापन शुरू हुआ। जिनमें प्रमुख समाजशास्त्री –

(1) लेस्टर वार्ड (2) चार्ल्स कुले (3) मैकाइवर (4) सदरलेण्ड

(5) सोरोकिन (6) पार्सन्स आदि थे।

उत्तर 7. विभिन्न समाजशास्त्रियों ने परिवार को इसके आकार, ऐतिहासिकता तथा कार्यों के आधार पर भिन्न–भिन्न रूप में परिभाषित किया है

मैकाइवर तथा पेज – के अनुसार परिवार वह छोटा समूह है जो यौन–सम्बन्धों पर आश्रित है तथा सन्तान के जन्म और पालन–पोषण की व्यवस्था करता है।

परिवार की प्रमुख विशेषताएँ – मैकाइवर और पेज तथा किंग्सले डेविस ने परिवार की प्रकृति को अनेक विशेषताओं के आधार पर स्पष्ट किया है इनमें से कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्न प्रकार है –

(1) सार्वभौमिकता –

सभी संस्थाओं और समितियों में परिवार सबसे अधिक सार्वभौमिक है। परिवार की सार्वभौमिकता का कारण यह है कि यह व्यक्ति की उन आवश्यकताओं को पूरा करता है जिन्हें किसी भी दूसरे समूह द्वारा नहीं किया जा सकता।

(2) छोटा आकार –

परिवार के सदस्य केवल वे व्यक्ति ही होते है जिन्होंने इसमें जन्म लिया हो अथवा विवाह सम्बन्ध स्थापित किये हैं।

(3) सदस्यों का असीमित दायित्व –

परिवार में किसी भी सदस्य के दायित्वों की कोई निश्चित सीमा नहीं होती इसमें व्यक्ति सभी कार्य करता है जो दूसरे सभी सदस्यों के लिए उपयोगी होता हैं।

(4) परम्पराओं की प्रधानता –

परिवार एक ऐसा समूह है जो अनेक सांस्कृतिक और परम्परागत नियमों पर आधारित होता है।

(5) रचनात्मक प्रभाव –

परिवार में सभी सदस्य अपने व्यवहारों के द्वारा एक दूसरे को रचनात्मक रूप से प्रभावित करते हैं तथा पारस्परिक सहयोग को बढ़ाते है –

(6) भावनात्मक आधार

(7) सामाजिक ढाँचे में केन्द्रीय स्थिति

(8) परिवार की स्थायी व अस्थायी प्रकृति

अथवा

उत्तर – समाजशास्त्रियों ने विवाह को अनेक प्रकार से परिभाषित किया है।

परिभाषा – वेस्टरमार्क – के शब्दों में ''विवाह एक या अधिक पुरूषों का एक या अधिक स्त्रियों के साथ स्थापित होने वाला वह सम्बन्ध है जो प्रथा या कानून के द्वारा मान्य होता है और जिसमें विवाह से सम्बंधित दोनों पक्षों और उनसे उत्पन्न होने वाले बच्चों के अधिकारों और कर्तव्यों का समावेश होता है।''

विवाह के उद्‌देश्य – विवाह के सामान्य उद्‌देश्य निम्न प्रकार है।

(1) परिवार की स्थापना –

सभी समाजों में विवाह का सर्वप्रमुख उद्‌देश्य परिवार की स्थापना करके व्यक्ति की सामाजिक प्रस्थिति को निर्धारित करना है।

(2) यौन सम्बन्धों की व्यवस्थित पूर्ति –

विवाह का दूसरा उद्‌देश्य कुछ विशेष नियमों के अन्तर्गत व्यक्ति को यौन सन्तुष्टि के सीमित अधिकार प्रदान करना है। जिससे पारस्परिक संघर्षों को रोका जा सके नैतिक जीवन को बनाये रखा जा सके और समाज की निरन्तरता बनी रह सके।

(3) नैतिक गुणों का विकास –

विवाह एक ऐसी संस्था है जो व्यक्तियों में पारस्परिक त्याग, प्रेम, स्नेह, कर्तव्य की भावना, सहयोग और सहिष्णुता जैसे गुण उत्पन्न करती है।

(4) संस्कृति का हस्तान्तरण –

संस्कृति का एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरण करने का कार्य पति–पत्नी द्वारा अपनी सन्तानों को दी गयी सांस्कृतिक शिक्षा के माध्यम से सम्भव हो पाता है।

(5) आर्थिक सहयोग –

प्रत्येक समाज में विवाह का उद्‌देश्य सम्बन्धित पक्षों को कुछ आर्थिक दायित्व सौंपना है बच्चों के पालन पोषण और उनकी अन्य आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए ही पति–पत्नी द्वारा आर्थिक क्रियाओं में सहभाग किया जाता है।

(6) धार्मिक तथा सामाजिक कर्तव्यों की पूर्ति –

प्रत्येक समाज में विवाह के द्वारा व्यक्तियों से कुछ विशेष धार्मिक और सामाजिक कर्तव्यों को पूरा करने की आशा की जाती है।

उत्तर 8. अर्थ – संस्कृति उन अनेक भौतिक तथा बौद्धिक साधनों की सम्पूर्णता है जिनके द्वारा मानव अपनी जैविकीय तथा सामाजिक आवश्यकताओं को सन्तुष्ट करके अपने पर्यावरण से अनुकूलन करता है। अर्थात मुनष्य द्वारा सीखे हुए सभी व्यवहारों की सम्पूर्णता संस्कृति कहलाती है।

संस्कृति का प्रकार – संस्कृतियों को विद्वानों ने चार भागों में विभाजित किया है।

(1) आध्यात्मिक संस्कृति

(2) भौतिकवादी संस्कृति

(3) सुखवादी संस्कृति

(4) आक्रामक संस्कृति

संस्कृति एक परिवर्तनशील तथ्य है। मनुष्य के अनुभवों तथा जरूरतों के अनुसार इसमें परिवर्तन होता रहता है। सभी समाजों की सांस्कृतिक विशेषताएँ एक–दूसरे से कुछ अलग होती है। इस आधार पर विद्वानों ने संस्कृतियों के अनेक रूपों का उल्लेख किया है। इनमें आध्यात्मिक संस्कृति, भौतिकवादी संस्कृति, सुखवादी संस्कृति तथा आक्रामक संस्कृति कुछ प्रमुख रूप है। भारतीय समाज में सांस्कृतिक विविधता अधिक दिखाई देती है। इसी कारण यहाँ प्रति–संस्कृति की दशा भी प्रभावी बनी है।

अथवा

उत्तर – संस्कृति तथा पर्यावरण दोनों एक–दूसरे को प्रभावित करते है।

मुनष्य के जीवन को जितनी भी दशाएँ चारों ओर से प्रभावित करती है, उनकी सम्पूर्णता को पर्यावरण कहा जाता है। पर्यावरण को मुख्य रूप से तीन भागों में बांटा गया है प्राकृतिक पर्यावरण, सामाजिक पर्यावरण तथा सांस्कृतिक पर्यावरण। प्राकृतिक पर्यावरण में वे सभी प्राकृतिक शक्तियाँ आती है, जो मनुष्य के प्रभाव से स्वतन्त्र है अथवा जिनमें मुनष्य द्वारा कोई संशोधन नहीं किया जा सकता है। पृथ्वी की बनावट, जलवायु, तापक्रम तथा वर्षा आदि प्राकृतिक पर्यावरण के उदाहरण है। मनुष्य विभिन्न प्रकार के जिन समूहों और संगठनों के बीच रहता है। वह उसका सामाजिक पर्यावरण होता है। विभिन्न प्रकार के समूह सामाजिक संगठन की प्रकृति व्यवहार के नियम सामाजिक नियंत्रण की व्यवस्था सामाजिक मूल्य व्यक्ति की प्रस्थिति और भूमिका को प्रभावित करने वाली संस्थाएं आदि सामाजिक पर्यावरण के मुख्य पक्ष है।

सांस्कृतिक पर्यावरण के अन्तर्गत वे सभी भौतिक और अभौतिक तत्व आते हैं जिनका निर्माण मुनष्य द्वारा अपनी जैविकीय, सामाजिक मनोवैज्ञानिक, आर्थिक और शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए किया जाता है। इसका आशय है कि सभी तरह की प्रथाएँ, परम्पराएँ, विचार, विश्वास, व्यवहार के नियम, औजार, मशीने, कलात्मक वस्तुएँ तथा प्रौद्योगिकी आदि संस्कृति के उदाहरण है। यह सच है कि आज तक विकसित संस्कृति का निर्माण करके मनुष्य ने प्रकृति के प्रभाव से अपने–आपको काफी सीमा तक स्वतन्त्र कर दिया।

उत्तर 9. मर्सर और वाडर ने अपनी पुस्तक ''द स्टडी ऑफ सोसाइटी'' में प्रतिस्पर्द्धा के चार मुख्य रूपों का उल्लेख किया है –

(1) विशुद्ध तथा सीमित प्रतिस्पर्द्धा –

जब दो पक्षों के बीच बिना किसी सांस्कृतिक या आर्थिक नियमों के स्वतन्त्र रूप से प्रतिस्पर्द्धा होती है तो इसे विशुद्ध प्रतिस्पर्द्धा कहा जाता है। जबकि सीमित प्रतिस्पर्द्धा वह है जो कुछ नियमों को ध्यान में रखकर की जाती है।

(2) निरपेक्ष और सापेक्ष प्रतिस्पर्द्धा –

जब किसी एक पद को पाने के लिए अनेक लोग एक–दूसरे से प्रतिस्पर्द्धा करते है, तब इसे निरपेक्ष प्रतिस्पर्द्धा कहा जाता है। जबकि सापेक्ष प्रतिस्पर्द्धा वह है, जो बहुत से लोगों द्वारा समाज में विशेष प्रतिष्ठा, संपत्ति या अधिकार पाने के लिये की जाती है।

(3) वैयक्तिक और अवैयक्तिक प्रतिस्पर्द्धा –

जब प्रतिस्पर्द्धा ऐसे व्यक्तियों के बीच होती है। जो एक–दूसरे को वैयक्तिक रूप से जानते हुए उनके साथ अन्तर्क्रिया करने के बाद भी उनसे आगे निकलने का प्रयास करते है, तब इसे वैयक्तिक प्रतिस्पर्द्धा कहते है। जबकि अवैयक्तिक प्रतिस्पर्द्धा वह है जिसमें हम उन लोगों को व्यक्तिगत रूप से नहीं जानते जिनसे हम प्रतिस्पर्द्धा कर रहे होते है।

(4) रचनात्मक तथा हानिकारक प्रतिस्पर्द्धा –

रचनात्मक प्रतिस्पद्धा वह है जो समाज के लिए लाभप्रद होती है। जबकि हानिकारक प्रतिस्पर्द्धा में कुछ लोग तात्कालिक लाभ पाने के लिये समाज द्वारा अस्वीकृत व्यवहारों का सहारा लेने लगते है।

अथवा

उत्तर – संघर्ष को निम्नांकित मुख्य विशेषताओं के आधार पर समझा जा सकता है –

(1) संघर्ष की प्रकृति वैयक्तिक होती है। इसका आशय है कि जिन दो पक्षों के बीच संघर्ष होता है, वे वैयक्तिक रूप से एक–दूसरे को जानते हुए उन्हें हानि पहुँचाने का प्रयास करते है। दूसरे शब्दों में, एक व्यक्ति अथवा समूह किसी विशेष व्यक्ति अथवा समूह से ही संघर्ष करता है, अन्य सभी से नहीं।

(2) संघर्ष की प्रकृति बहुत अधिक चेतन होती है। इसका आशय है कि संघर्ष में लगे दोनों पक्ष एक दूसरे की शक्ति और साधनों का अच्छी तरह मूल्यांकन करके विभिन्न साधनों के द्वारा एक दूसरे को दबाने का प्रयत्न करते है।

(3) बल–प्रयोग संघर्ष का जरूरी तत्व है। यह हिसां की धमकी अथवा उत्पीड़न आदि किसी भी रूप में हो सकता है।

(4) संघर्ष एक अस्थायी प्रक्रिया है। समाज में सहयोग और प्रतिस्पर्द्धा की प्रक्रियाएँ जहाँ सदैव चलती रहती है, वही संघर्ष उतने ही समय तक चलता रहता है। जब तक एक पक्ष दूसरे पर अपना प्रभुत्व स्थापित न कर ले।

उत्तर 10. बहुत–से विद्वानों ने सामाजिक परिवर्तन का मुख्य कारण समाज की जनसंख्या सम्बन्धी विशेषताओं में परिवर्तन होना माना है इनका विचार है कि समाज की विभिन्न संस्थाओं, नियमों और परम्पराओं का विकास उसकी जनसंख्या के आकार के अनुसार ही होता है। जनसंख्या कम होने पर परम्परागत जीवन को प्रोत्साहन मिलता है। जनसंख्या में होने वाली वृद्धि से सामाजिक संस्थाओं और सामाजिक ढाँचे में परिवर्तन की जरूरत महसूस की जाने लगती है। इसी प्रकार जनसंख्या की विशेषताओं में होने वाला परिवर्तन भी सामाजिक परिवर्तन का मुख्य कारण है।

उदाहरण –

जब किसी समाज की जनसंख्या में स्त्री और पुरूषों के अनुपात में अधिक अन्तर हो जाता है, तब सामाजिक सन्तुलन बिगड़ने लगता है। इससे व्यवहार के तरीकों में भी परिवर्तन होता है।

इसी तरह जनसंख्या में यदि वृद्ध व्यक्तियों की संख्या अधिक होती है तो परम्पराओं का प्रभाव बढ़ता है, जबकि युवा वर्ग की संख्या अधिक होने से सामाजिक परिवर्तन को प्रेरणा मिलती है। सामाजिक परिवर्तन में जनसंख्यात्मक कारकों के प्रभाव को इसी तथ्य से समझा जा सकता है कि भारत में स्वतंत्रता के समय देश की जनसंख्या जहाँ 33 करोड़ थी, वही सन् 2007 तक यह लगभग 117 करोड़ हो गयी। इसके फलस्वरूप परिवार नियोजन के व्यापक कार्यक्रम के साथ ही शिक्षा–प्रणाली में परिवर्तन हुआ। संयुक्त परिवारों की जगह एकाकी परिवारों को प्रोत्साहन मिला। नगरी करण में वृद्धि हुई तथा व्यक्तियों के सम्बन्धों की प्रवृत्ति बहुत अधिक बदल गयी।

अथवा

उत्तर – प्रगति और क्रान्ति से सम्बंधित सभी विशेषताओं से स्पष्ट होता है कि इन दोनों अवधारणाओं के बीच अनेक अन्तर है।

(1) सर्व प्रथम प्रगति धीरे–धीरे होने वाला परिवर्तन है जबकि क्रान्ति वह परिवर्तन है जिसमें बहुत अधिक तीव्रता होती है।

(2) प्रगति से सम्बंधित परिवर्तन का पहले से अनुमान लगाया जा सकता है लेकिन क्रान्ति से सम्बंधित परिवर्तन का परिणाम क्या होगा, इसका निश्चित अनुमान लगा पाना बहुत कठिन होता है।

(3) प्रगति में सामाजिक मूल्य शामिल रहते है लेकिन क्रान्ति की दशा में सामाजिक मूल्यों का लोगों के व्यवहारों पर कोई प्रभाव नहीं रह जाता।

(4) प्रगति एक निश्चित दिशा अथवा रेखीय क्रम में होने वाला परिवर्तन है। दूसरी ओर, क्रान्ति से सम्बन्धित परिवर्तन ऊपर–नीचे उठती और गिरती रेखा के रूप में होता है। इसका आशय है कि क्रान्ति से सम्बंधित परिवर्तन की कोई निश्चित दिशा नहीं होती।

उत्तर 11. शाब्दिक रूप से 'पर्यावरण' दो शब्दों से मिलकर बना है–परि+आवरण/'परि' का अर्थ है 'चारों ओर' तथा 'आवरण' का अर्थ है 'ढके हुए'। इससें स्पष्ट होता है। कि पर्यावरण का आशय उन सभी दशाओं से है जो किसी प्राणी या वस्तु को चारों ओर से घेरे रहती है। पर्यावरण के अनुसार ही विभिन्न समुदायों की संरचना एक विशेष तरह से बनती और विकसित होती है। पर्यावरण की प्रकृति को स्पष्ट करने के लिए लेण्डिस ने इसके तीन प्रमुख भागों कों स्पष्ट किया है –

1. **प्राकृतिक पर्यावरण –** वे सभी प्राकृतिक शक्तियाँ जिनकों मनुष्य प्रभावित नही कर सका है, प्राकृतिक पर्यावरण के अन्तर्गत आती है।

   उदाहरण – जलवायु, तापमान, ऋतुएँ, भूमि की बनावट, खनिज पदार्थ, वर्षा, तरह–तरह की वनस्पतियाँ तथा ग्रहों और नक्षत्रों का परिचलन आदि हमारा प्राकृतिक पर्यावरण है। इसी को हम भौगोलिक पर्यावरण भी कहते है। उदाहरणार्थ भौगोलिक परिस्थितियों के कारण भूकंप संभावित क्षेत्र अथवा बर्फीले क्षेत्र अथवा अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में घरों की बनावट भिन्न–भिन्न होती है।

2. **सामाजिक पर्यावरण –** जो दशाएँ हमारे सामाजिक जीवन का निर्माण करती है, वे व्यक्ति का सामाजिक पर्यावरण होती है।

   किसी समाज में पाए जाने वाले विभिन्न वर्ग, सामाजिक संगठन, सामाजिक नियंत्रण की व्यवस्था, समाज के मूल्य आदि सामाजिक पर्यावरण का निर्माण करते हैं।

3. **सांस्कृतिक पर्यावरण –** मनुष्य ने अपने प्रयासों, बुद्धि और अनुभव के द्वारा जितने भी भौतिक और अभौतिक आविष्कार किये है, वे सभी व्यक्ति और समाज के जीवन को व्यापक रूप से प्रभावित करते है।

   उदा0– उत्पादन के तरीके, भौतिक आविष्कार, रीति–रिवाज, धार्मिक विश्वास, कला, भाषा, कानून, फैशन के तरीके, उपकरण तथा संचार के साधन आदि सामाजिक

व्यवस्था को विकसित करते हैं, इनकी सम्पूर्णता को ही सांस्कृतिक पर्यावरण कहते हैं। प्राकृतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पर्यावरण की सम्पूर्णता को ही सम्पूर्ण पर्यावरण कहा जाता है।

अथवा

उत्तर – ग्रामीण समाजों का जीवन एक परम्परागत जीवन है जो खेती, पशुपालन अथवा दस्तकारी के लिए कच्चें माल की आपूर्ति के लिए आज भी एक बड़ी सीमा तक प्राकृतिक दशाओं पर निर्भर है। नगरीय समुदायों में प्राकृतिक पर्यावरण पर व्यक्ति की निर्भरता तेजी से कम होती जा रही है। विकसित प्रौधोगिकी तथा नये आविष्कारों के द्वारा उन दशाओं को काफी नियन्त्रित कर लिया गया है जो व्यक्ति की कार्यकुशलता और उत्पादन में बाधक थी। ग्रामीण तथा नगरीय समुदायों का सांस्कृतिक पर्यावरण भी एक–दूसरे से अलग है। ग्रामीण जीवन में आज भी जहाँ प्रथाओं, परम्पराओं तथा धार्मिक विश्वासों के द्वारा व्यक्ति के अधिकांश व्यवहार प्रभावित होते है, वहीं नगरीय जीवन में शिक्षा और तर्क–प्रधान जीवन के कारण सामाजिक मूल्यों, प्रथाओं तथा भाग्य संबंधी विश्वासों का प्रभाव कम होता जा रहा है।

उत्तर 12. पूँजीवादी व्यवस्था की दो विशेषताएँ है।

(1) निजी सम्पत्ति की धारणा

(2) लाभ की प्रवृति

समाज में व्यक्ति प्रकृति से प्राप्त वस्तु के द्वारा ही अपनी जरूरतों को पूरा कर लेते है। इसके फलस्वरूप सभी व्यक्तियों को प्राप्त होने वाले साधन और सुविधाएँ बहुत कुछ समान थी इसलिए आादिम समाज में न तो वर्ग विभाजन था और न ही किसी तरह का वर्ग संघर्ष पाया जाता था। इसके बाद जब उत्पादन प्रणाली पर कुछ लोगों का एकाधिक शुरू हुआ और निजी सम्पत्ति की धारणा को प्रोत्साहन मिला तब समाज को विभिन्न वर्गो में विभाजित होने लगा। विभिन्न युगों में यह वर्ग माालिक और दास सामंत और अर्थ दास किसान कुलीन लोग और साधारण जनता, पूँजीपति और श्रमिक के रूप में सामने आऐ। विभिन्न युगों में इन मालिकी सामान्तों कुलीन लोगों और पूँजीपतियों ने उत्पादन का कार्य उस वर्ग के द्वारा किया जाता रहा। जिसका उत्पादन के साधनों पर किसी तरह का अधिकार नहीं होता था। इससे स्पष्ट होता है जब कोई शोषित वर्ग का असन्तोष लगातार बढ़ता जाता हैं तो इसी सन्तोष से वर्ग संघर्ष का जन्म होता है।

अथवा

उत्तर – पूँजीवाद में वर्ग संघर्ष की दशा सभी युगों में मौजूद रही है लेकिन इसका मुख्य सम्बंध पूँजीवादी व्यवस्था से है पूँजीवादी व्यवस्था में समाज दो मुख्य वर्गों में विभाजित होता है एक वह वर्ग जिनके पास पूँजी की शक्ति होती है और दुसरा सर्वहारा अथवा श्रमिक वर्ग मार्क्स से स्पष्ट किया कि पूँजीवाद में स्वयं ऐसे तत्व अथवा विशेषताएँ मौजूद होती है। जिससे वर्ग संषर्घ पैदा होना जरूरी हो जाता है सर्वप्रथम इस अवस्था में पूँजीपति अपनी पूँजी की शक्ति से कामगारों के श्रम को बहुत कम कीमत पर खरीदकर उससे अतिरिक्त लाभ प्राप्त करते हैं इसके फलस्वरूप श्रमिकों का शोषण बहुत बढ़ जाने से वर्ग संघर्ष होना जरूरी हो जाता हैं, दूसरे पूँजीवादी व्यवस्था के कारण अकसर अद्यौगिक सकंट की दशाऐं पैदा होती है इसका सामना करने के लिए पूँजीपति श्रमिक की मजदूरी कम करके वस्तुओं का मूल्य घटा लेते है कम मजदूरी से जब श्रमिक जब अपनी जरूरतें प्राप्त नहीं कर पाते तब उनका असंतोष और अधिक बढ़ जाता है तीसरे इस व्यवस्था में उत्पादित वस्तुओं का विक्रय करने के लिए जब यातायात और संचार के साधनों को विकसित किया जाता है तो श्रमिक को भी एक दूसरे के सम्पर्क में आने का अवसर मिल जाता है इससे श्रमिकों में वर्ग चेतना पैदा होती है और वे संगठित होकर शोषण के विरूद्ध आवाज उठाने लगते हैं इस आधार पर मार्क्स ने यह स्पष्ट किया कि वर्ग संघर्ष पूँजीवादी व्यवस्था का एक जरूरी प्रमाण है।

उत्तर 13. राजनीति शास्त्र वह विज्ञान है जो राज्य की उत्पत्ति राज्य व्यवस्था और शासन के सिद्धान्तों की विवेचना करता है इन दोनों विज्ञानों का सम्बंध अनेक तथ्यों से स्पष्ट हो जाता है। सर्व प्रथम इन दोनों विज्ञानों का उद्देश्य व्यक्ति का समाजीकरण करना तथा एक नियमबद्ध जीवन का प्रशिक्षण देना है दूसरे समाज शास्त्र के द्वारा जिन नियमों की खोज की जाती है उन्हीं की सहायता से राज्य को अधिक संगठित बनाना सम्भव हो पाता है तीसरे वर्तमान रूप में राज्य को कानूनों द्वारा सामाजिक जीवन को संगठित बनाना सम्भव हो सकता है। चौथे अनेक विषयों जैसे – कानून परम्परा, जनमत, नेतृत्व सामाजिक नियंत्रण तथा राजनीतिक दल आदि का अध्ययन समाजशास्त्र और राजनीति शास्त्र में समान रूप से किया जाता है यही कारण है कि दोनों विज्ञान एक–दूसरे से घनिष्ठ सम्बंध है।

अथवा

उत्तर – अर्थशास्त्र उन आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन है जो मानव कल्याण से सम्बंधित है। समाज शास्त्र का अंतिम उद्देश्य भी समाज कल्याण में वृद्धि, करना है इसके

अलावा ये दोनों विज्ञान औद्योगीकरण नगरीकरण, श्रम, समस्याएँ ग्रामीण पुनर्निर्माण तथा सामाजिक आर्थिक समस्याएँ का अध्ययन संयुक्त रूप से करते है वास्तव में आज के जीवन में सामाजिक तथा आर्थिक पक्ष को एक–दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता।

समाज शास्त्र तथा अर्थशास्त्र दोनों ही स्वतंत्र विषय है लेकिन इन दोनों का अध्ययन एक–दूसरे पर निर्भर है और परस्पर संबंधित है अर्थशास्त्र की विषयवस्तु को मुख्य चार भागों में बाँटा है उपभोग, धर्म तथा विनिमय तथा विवरण इसमें से कोई भी भाग ऐसे नहीं है जो एक समाज का संस्कृति, प्रथाओं और सामाजिक सम्बंध से प्रभावित न हों।

उत्तर 14. आर्थिक संस्था का आशय उन सभी नियमों और कार्य प्रणालियों से है जिनके द्वारा आर्थिक क्रियाओं को नियमित किया जाता है। जब अनेक आर्थिक संस्थाएं मिलकर एक विशेष आर्थिक तन्त्र का निर्माण करती हैं, तब इसे हम अर्थव्यवस्था कहते है।

आर्थिक क्रियाओं को व्यवस्थित बनाने वाली संस्थाओं में कुछ संस्थाएँ अधिक महत्वपूर्ण हैं। यह है – (1) सम्पत्ति, (2) श्रम विभाजन, (3) संविदा, (4) बाजार, (5) विनिमय प्रणाली, (6) प्रतियोगिता, (7) आधुनकि व्यवसाय। इन संस्थाओं की प्रकृति के अनुसार जिन आर्थिक संबंधों का विकास होता है, उन्हीं से एक विशेष तरह की अर्थव्यवस्था विकसित होती है।

दुनिया की सभी अर्थव्यवस्थाओं को तीन मुख्य भागों में विभाजित किया जाता है– (1) आदिम अर्थ व्यवस्था, (2) कृषि अर्थ व्यवस्था तथा (3) औद्योगिक अर्थ व्यवस्था। आदिम अर्थ व्यवस्था सरल समाजों की वह विशेषता है जिसमें सभी आर्थिक संस्थाओं का रूप बहुत सरल होता है। कृषि अर्थ व्यवस्था मुख्यतः कृषि और कुटीर उद्योगों पर आधारित होती है तथा इसमें आर्थिक परिवर्तन नहीं होता। औद्योगिक अर्थ व्यवस्था औद्योगिक क्रान्ति का परिणाम है जो आज दुनिया के सभी देशों में किसी न किसी रूप में जरूर मौजूद है।

अथवा

उत्तर – सरकार राज्य की वह सबसे महत्वपूर्ण संस्था है जिसकी प्रकृति के अनुसार विकास होता है। सरकार ही कानूनों का निर्माण करती है तथा उन कानूनों को लागू करके व्यक्तियों के व्यवहारों पर नियत्रंण रखती है। सरकार की प्रकृति को स्पष्ट करते हुए ऑगबर्न तथा निमकॉफ (Ogburn and Nimkoff) ने लिखा है कि, ''सरकार का

आशय एक ऐसे राजनैतिक संगठन से है जो सम्पूर्ण समूह में व्यवस्था बनाये रखने का कार्य करता है'' इस कथन से यह शंका हो सकती है कि सरकार व्यक्तियों का संगठन होने के कारण केवल एक समूह या सीमित है। वास्तव में प्रभुसत्ता तथा एक निश्चित कार्य प्रणाली सरकार के दो मुख्य तत्व है। इस आधार पर सरकार एक राजनैतिक संस्था हो जाती है।

सरकार के कार्य –

1. **वैधानिक कार्य –** सरकार का रूप चाहे राजतन्त्रात्मक हो अथवा अधिनायकवादी अथवा लोकतान्त्रिक, प्रत्येक सरकार अपने भू–भाग में रहने वाले व्यक्तियों के व्यवहारों पर नियन्त्रण रखने के लिए कानून बनाती है तथा जरूरतों और परिस्थितियों के अनुसार इसमें परिवर्तन करती है।
2. **कार्यपालिका सम्बन्धी कार्य –** सरकार का दूसरा महत्वपूर्ण कार्य कानूनों को प्रभावशाली ढंग से लागू करना है। इसके लिए सरकार द्वारा विभिन्न विभागों से सम्बन्धित अधिकारियों और कर्मचारियों को नियुक्त किया जाता है।
3. **न्यायापालिका सम्बन्धी कार्य –** सरकार का तीसरा महत्वपूर्ण कार्य कानून के अनुसार लोगों के विवादों को दूर करना तथा व्यक्ति को न्याय देना है यह कार्य न्यायालयों के द्वारा किया जाता है।

उत्तर 15. **समाजीकरण के सिद्धान्त –** समाजीकरण के उद्देश्यों तथा प्रक्रिया को विभिन्न विद्वानों ने अनेक सिद्धान्तों के रूप में स्पष्ट किया है। एक ओर चार्ल्स कूले मीड तथा फ्रायड ने मनोवैज्ञानिक आधार पर ''आत्म'' के विकास को समाजीकरण का उद्देश्य बताया है जबकि दुर्खीम ने सामाजिक संरचना तथा सामूहिक चेतना के आधार पर समाजीकरण की प्रक्रिया को स्पष्ट किया है। वास्तव में विभिन्न समाजों में समाजीकरण की प्रक्रिया का रूप एक विशेष समाज की जरूरतों, परिस्थितियों तथा सामाजिक मूल्यों के अनुसार निर्धारित होता है।

अथवा

उत्तर – व्यक्तित्व को प्रभावित करने वाली सांस्कृतिक दशाओं को ही हम व्यक्तित्व के सांस्कृतिक कारक कहते हैं। इनमें (1) लोकाचार, (2) प्रथाएँ, (3) परम्पराएँ, (1) धर्म तथा नैतिकता, (5) संस्थाएँ, (6) भाषा, (7) प्रशिक्षण के तरीके तथा (8) वैज्ञानिक प्रगति आदि महत्वपूर्ण सांस्कृतिक कारक हैं।

1. **लोकाचार –** लोकाचार संस्कृति का महत्वपूर्ण अंग होते हैं। यह जनरीतियों का विकसित रूप हैं। इसका तात्पर्य है कि किसी समूह में व्यवहार के जो ढंग उपयोगी सिद्ध होते हैं।

2. **प्रथाएँ –** प्रथा का आशय व्यववहार के उस ढंग अथवा नियम से है जिसे समूह कल्याण के लिए जरूरी मान लिया जाता है। जैसे ही व्यवहार का कोई नियम प्रथा के रूप में मान्य होता है, उसमें छोटे–बड़े नियम शामिल हो जाते है।

3. **परम्पराएँ –** परम्परा एक सामूहिक शब्द है जिसमें वे सभी प्रथाएँ, विचार और आदतें शामिल होती हैं जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी की हस्तान्तरित होती है। विभिन्न अवसरों पर मित्रों को उपहार देना, शिष्टाचार के नियमों का पालन करना, होली एक–दूसरे के गले मिलना, अतिथि का सत्कार करना है।

4. **धर्म तथा नैतिकता –** धर्म का आशय केवल एक अलौकिक शक्ति में विश्वास करना ही नहीं है बल्कि धर्म से सम्बन्धित नियम और विश्वास व्यक्ति में मानवीय गुणों को बढ़ाते है।

उत्तर 16. सामाजिक संरचना की परिभाषा –

1. **गिन्सबर्ग –** गिन्सबर्ग के शब्दों में सामाजिक संरचना का सम्बन्ध सामाजिक संगठन के प्रमुख स्वरूपों अर्थात विभिन्न समूहों, समितियों तथा संस्थाओं आदि के संकुल से है।''

2. **कोजर –** कोजर ने लिखा है कि ''सामाजिक संरचना का आशय विभिन्न सामाजिक इकाइयों के तुलनात्मक रूप से स्थिर और प्रतिमानित सम्बन्धों से है।''

सामाजिक संरचना की विशेषताएँ – सामाजिक संरचना की अवधारणा को इसकी कुछ मुख्य विशेषताओं के आधार पर निम्नांकित रूप में समझा जा सकता है :–

1. **सामाजिक संरचना एक क्रमबद्धता है –** जिन इकाइयों के द्वारा सामाजिक संरचना का निर्माण होता है, वे क्रमबद्ध रूप से व्यवस्थित होती है। यही क्रमबद्धता सामाजिक संरचना के विशेष स्वरूप को स्पष्ट करती है।

2. **सामाजिक संरचना अपेक्षाकृत स्थायी होती है –** सामाजिक संरचना का निर्माण जिन समूहों तथा संघों से होता है, उनकी प्रकृति अधिक स्थायी होती है। उदाहरण के लिए, समुदाय एक बड़ा समूह है, जबकि अनेक आर्थिक राजनैतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक समितियाँ छोटे समूह हैं। छोटे समूहों और उनके सदस्यों की प्रकृति में परिवर्तन होने पर भी समुदाय की संरचना में साधारणतया कोई परिवर्तन नहीं होता।

3. **सामाजिक संरचना की अनेक उप संरचनाएँ होती है –** सामाजिक संरचना का निर्माण करने वाली विभिन्न इकाइयों की संरचना को उनकी उप–संरचना कहा जाता है जैसे राज्य सरकार राजनैतिक दल तथा दाबाव–समूह एक राजनैतिक संरचना की उप–संरचनाएँ हैं।

4. **सामाजिक संरचना के विभिन्न अंग आपस में सम्बन्धित होते है –** सामाजिक संरचना की उप–संरचनाएँ एक–दूसरे से सम्बन्धित रहकर किसी सामाजिक संरचना को उपयोगी और प्रभावशाली बनाती है।
5. **सामाजिक संरचना में अनेक मूल्य शामिल होते है –** व्यवहार और सम्मान के अनेक तरीके, जनरीतियाँ, प्रभाएँ, परम्पराएँ तथा इस बात का निर्धारण करते है कि किसी सामाजिक संस्थान की प्रकृति किस प्रकार की होगी। इनके आधार पर ही परम्परागत संरचना अथवा वर्गों पर आधारित सामाजिक संरचना का निर्माण होता है।
6. **सामाजिक संरचना के प्रत्येक अंग के निर्धारित प्रकार्य होते है –** इन प्रकार्यों का निध ारण सामाजिक मूल्य तथा सामाजिक प्रतिमानों के द्वारा होता है। इसी कारण लोगों का यह प्रयत्न रहता है कि अपनी सामाजिक संरचना के मूल्यों में कोई परिवर्तन न होने दे।

अथवा

उत्तर – शाब्दिक रूप से नृजातिकी का अर्थ सामूहिकता और कुछ लोगों के बीच भाईचारे की भावना से होता है। अर्थात नृजातिकी एक भावना है जो विभिन्न मानव समूहों को अपनी अलग संस्कृति, धर्म वेशभूषा और भाषा के आधार पर उन्हें एक–दूसरे से भेद करने की प्रेरणा देती है। नृजातिकी का आधार भावनाएँ और पूर्वाग्रह है। नृजातिकी के आधार पर अधिकांश समाजों में विभिन्न समूहों के बीच भेदभाव बढ़ने की प्रवृत्ति विकसित हुई है। यदि हम भारत का उदाहरण लें तो भाषा, धर्म और संस्कृति के आधार पर विभिन्न समुदायों के बीच बढ़ते हुए तनाव नृजातिकी के प्रभाव को ही प्रकट करते है। समाजशास्त्र में इस प्रवृत्ति को नृजातियता की प्रवृत्ति कहा जाता है।

नृजातिकी तथा सामाजिक स्तरीकरण के बीच घनिष्ठ संबंध है अधिकांश समाजों में हमें दो मुख्य भाग बहुसंख्यक एवं अल्पसंख्यक देखने को मिलते हैं। बहुसंख्यक अर्थात वे जिनके रीति रिवाज, धर्म, भाषा और संस्कृति में समानता होती है जबकि अल्पसंख्यक वह भाग होता है जिसकी धार्मिक, सांस्कृतिक विशेषताऐं भिन्न होने के साथ ही जनसंख्या में भी प्रतिशत कम होता है। बहुसंख्यक भाग का प्रयास होता है कि अल्पसंख्यक भाग को अधिकार कम दिए जाऐं तथा उन्हें बहुसंख्यक समुदाय की संस्कृति के अनुसार व्यवहार करने को बाध्य किया जाए। इस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था के स्रतीकरण को नृजातिकी से उत्पन्न होने वाला स्तरीकरण कहते हैं।

आज दुनिया के अधिकांश समाज बहुजन समाज हैं, यही कारण है कि अधिकांश समाज आज लोकतन्त्र धर्म निरपेक्षता तथा अवसरों की समानता के सिद्धान्त को अपनाकर विभिन्न नृजातिकी समूहों के बीच एकीकरण बढ़ाने का प्रयास कर रहे है।

उत्तर 17. सामाजिक पारिस्थितिकी वह विज्ञान है जो किसी समुदाय पर भौतिक, सांस्कृतिक तथा सामाजिक दशाओं के प्रभाव का अध्ययन करता है। ''समाजशास्त्र के अन्तर्गत सामाजिक पारिस्थितिकी विभिन्न समुदायों तथा उनके पर्यावरण के सम्बन्ध का अध्ययन है।'' **परिभाषा –** (ऑगबर्न निमकॉफ के अनुसार) ''मानव पारिस्थितिकी मानव प्राणियों तथा उनके पर्यावरण के आपसी संबंध को स्पष्ट करती है।''

सामाजिक पारिस्थितिकी के तत्व –

मेकेन्जी ने सामाजिक पारिस्थितिकी के तत्वों को चार मुख्य भागों में विभाजित किया है –

1. **पर्यावरण –** सामाजिक पारिस्थितिकी का पहला तत्व पर्यावरण है इसका सम्बन्ध उन सभी भौगोलिक और सांस्कृतिक तत्वों से है जो समुदाय की संरचना तथा व्यक्तियों के व्यवहारों को प्रभावित करते है। उदाहरण के लिए, जलवायु, तापक्रम, खनिज पदार्थ, भूमि की बनावट भूमि का उपजाऊपन, समुद्र तथा नदियाँ अदि भौगोलिक तत्व है। दूसरी ओर धार्मिक नियम, विश्वास, प्रथाएँ, परम्पराएँ तथा व्यक्तियों द्वारा उपयोग में लायी जाने वाली वस्तुऐं सांस्कृतिक तत्व है।
2. **जनसंख्या –** सामाजिक के निर्माण में जनसंख्या की विशेषताओं का भी महत्वपूर्ण स्थान है। इसके अन्तर्गत जनसंख्या का आकार, जनसंख्या का धनत्व, स्वास्थ्य, सम्बन्धी विशेषताएं जन्म दर तथा मृत्य दर जनसंख्या में समरूपता अथवा विभिन्नता आदि मुख्य तत्व है।
3. **वसाहट का स्वरूप –** वसाहट या अधिवास के स्वरूप का आशय केवल मकानों की वनावट से ही नहीं है बल्कि रहने के स्थान के चारों और की परिस्थितियों, रहन–सहन का ढंग तथा जीवन स्तर का भी मानव वसाहट से महत्वपूर्ण सम्बन्ध होता है।
4. **अर्थ व्यवस्था –** मानव की परिस्थितिकी में आर्थिक व्यवस्था का विशेष महत्व है। कोई समुदाय जीवन–यापन के लिए पशुओं के शिकार पर निर्भर होता है, कहीं खेती के द्वारा जीविका उपर्जित की जाती है, कोई समुदाय दस्तकारी पर निर्भर होता है, जबकि किसी समुदाय में विकसित श्रम–विभाजन और विशेषीकरण के द्वारा आर्थिक क्रियाएँ की जाती है।
5. **सामाजिक संगठन –** परिवार का संगठन, नातेदारों की प्रवृत्ति आदि।
6. **प्रौद्योगिकी –** ज्ञान तथा उपकरण जिनके द्वारा व्यक्ति भौगोलिक दशाओं पर नियन्त्रण स्थापित करके अपनी जरूरतों को पूरा करता है।

अथवा

उत्तर – उन्नीसवी शताब्दी से औद्योगिकरण की प्रक्रिया शुरू होने के फलस्वरूप औद्योगिक नगरों का विकास शुरू हुआ। ऐसे नगरों का गाँवों की ओर विस्तार होना शुरू हुआ तथा ग्रामीण जनसंख्या का काफी हिस्सा नगरों में आकर बसजाने के कारण गाँव और नगरों की विशेषताओं का एक दूसरे से मिश्रण होने लगा।

आधुनिक महानगरों की प्रकृति परम्परागत नगरों से अलग है। ऐसे नगर विभिन्न प्रकार के व्यवसाय के केन्द्र है। इनमें जनसंख्या का धनत्व बहुत अधिक है जीवन के लिए प्रत्येक क्षेत्र में विशेषीकरण इनकी मुख्य विशेषताएँ है तथा उपनगरों के रूप में नगर की बाहरी सीमाओं की ओर होने वाला विस्तार सांस्कृतिक परिवर्तन की दशा को स्पष्ट करना है।

औद्योगिक नगर तथा महानगर की एक मुख्य विशेषता विभिन्न क्षेत्रों में भिन्न–भिन्न प्रकार की गतिविधियाँ विकसित होना है। जनसंख्या में भिन्नता आर्थिक विषयता, श्रम विभाजन, विशेषीकरण लोगों के बीच द्वितीयक संबंध, अज्ञात स्थिति, प्रतिस्पर्द्धा, गतिशीलता और व्यवसायों की बहुलता नगरों के कुछ विशेष लक्षण है।

उत्तर 18. वेबर ने ऐतिहासिक सम्प्रदाय के इस विचार को नहीं माना कि सामाजिक घटनाओं का वैज्ञानिक रूप से अध्ययन नहीं किया जा सकता। वेबर के अनुसार यदि हम सभी तरह के सामाजिक घटनाओं का अध्ययन न करे बल्कि कुछ अधिक महत्वपूर्ण घटनाओं का ही अध्ययन करें जिससे वैज्ञानिक मानदण्ड को बनाये जा सके। यह महत्वपूर्ण घटनाये कौन–कौन सी है; इसे उन्होंने समाजशास्त्र को नये सिरे से परिभाषित करके स्पष्ट किया। वेबर के अनुसार समाजशास्त्र वह विज्ञान है जो सामाजिक क्रिया की व्याख्यात्मक बोध करने का इस तरह प्रयास करता है जिससे उसके कारणों तथा परिणामों को समझा जा सके। इस परिभाषा के द्वारा वेबर ने यह स्पष्ट किया कि समाजशास्त्र की वास्तविक अध्ययन वस्तु सामाजिक क्रिया है। दूसरी ओर सामाजिक क्रिया का अध्ययन करने के लिए हम जिस वैज्ञानिक पद्धति की उपयोग कर सकते है वह व्याख्यात्मक बोध की प्रणाली है।

1. **सामाजिक क्रिया –** वेबर के अनुसार क्रिया तथा व्यवहार एक–दूसरे से अलग धारणाएँ है। वास्तव में व्यवहार का क्षेत्र क्रिया तुलना में कही अधिक व्यापक है क्योंकि इसके अन्तर्गत वे व्यवहार भी आ जाते है जो मुनष्य की इक्छा, बुद्धि अथवा दृष्टिकोण से प्रभावित नहीं होते। दूसरी ओर क्रिया का सम्बन्ध मनुष्य के केवल उन्हीं व्यवहारो से है जो अर्थ पूर्ण होते है। अर्थात जिन कार्यो को करने में कर्ता की प्रेरणाओं पर दूसरे

व्यक्तियों के दृष्टिकोण और क्रियाओं का प्रभाव पड़ा हो तथा जो कार्य अन्य व्यक्तियों को प्रभावित कर रहे हों, उन्हीं को सामाजिक क्रिया कहा जा सकता है।

2. **व्याख्याात्मक बोध –** सामाजिक क्रियाओं का अध्ययन किस ढगं से किया जाय ? इसके लिए वेबर ने जिस प्रणाली को प्रस्तुत किया उसे व्याख्यात्मक बोध कहा जाता है। व्याख्यात्मक बोध का आशय एक विशेष घटना को तर्कपूर्ण ढंग समझना है ऐसा तभी सम्भव हो सकता है जब व्यक्ति भवना में बहकर कोई निर्णय न ले। इस प्रकार व्याख्यात्मक बोध एक ऐसी प्रणाली है जो भावनात्मक निर्णय से दूर रहकर तर्कपूर्ण ढंग से घटनाओं का अध्ययन करने और कारणों की खोज करने पर जोर देती है।

3. **आदर्श प्रारूप –** वेबर ने आदर्श प्रारूप को ऐसे साधन के रूप में स्पष्ट किया जिसके द्वारा सामाजिक घटनाओं का व्याख्यात्मक बोध किया जा सकता है। आदर्श प्रारूप के अर्थ को स्पष्ट करते हुए वेबर ने बताया कि समान विशेषताओं वाली घटनाओं से जब मुख्य सैद्धांतिक श्रेणी का निर्माण होता है तो उसी को आदर्श प्रारूप कहते हैं।

    (1) आदर्श प्रारूप का सम्बन्ध समाज में घटित होने वाली कवेल महत्वपूर्ण घटनाओं का अध्ययन करने से है।

    (2) आदर्श प्रारूप की प्रकृति इसलिए सामाजिक होती है कि इन्हें पूरे समाज की स्वीकृति मिली होती है।

    (3) आदर्श प्रारूप की प्रकृति हमेशा एक सी नहीं रहती बल्कि इसमें समय–समय पर परिवर्तन होता रहता है।

    (4) इसके अन्तर्गत प्रत्येक क्रिया को उसी अर्थ में समझा जाता है।

अथवा

उत्तर – समाजशास्त्र के विकास में दुर्खीम का योगदान इतना महत्वपूर्ण है कि काम्ट के बाद आपको ही समाजशास्त्र का सबसे मुख्य संस्थापक माना जाता है। दुर्खीम के सभी विचारों का यदि एक सरल वर्गीकरण किया जाय तो इन्हें मुख्य दो भागों में विभाजित किया जा सकता है। पहले वर्ग में वे सभी अवधारणाएँ आती हैं। जिनका सम्बन्ध समाजशास्त्र के लिए एक वैज्ञानिक आधार ढूढ़ँना था। दूसरा वर्ग उन अवधारणाओं से सम्बंधित है जिनकी सहायता से सामूहिक चेतना के आधार पर सामाजिक घटनाओं की विवेचना की गयी वास्तव में दुर्खीम को वह पहला समाजशास्त्री माना जा सकता है।

1. सर्वप्रथम दुर्खीम ने किसी व्यवस्थित पद्धति का उल्लेख नहीं किया जिसके द्वारा वैज्ञानिक रूप से तथ्यों का अध्ययन करके निष्कर्ष दिये जा के।
2. सामाजिक तथ्यों को प्रकृति को स्पष्ट करने के लिये दुर्खीम ने उनका अध्ययन

एक वस्तु के रूप में करने पर अधिक जोर दिया किन्तु अमूर्त विशेषताओं के अध्ययन का आधार स्पष्ट नहीं कर सके।

3. विभिन्न तथ्यों की विवेचनों में दुर्खीम ने समूहिक चेतना को इतना अधिक महत्व दिया कि व्यक्ति को स्वतंत्र इच्छा का कोई स्थान नहीं रह पाता व्यवहारिक रूप से जीवन के सभी क्षेत्रों में सामूहिक चेतना का प्रभाव उतना अधिक नहीं होता जितना दूर्खीम द्वारा स्पष्ट कर दिया गया है।
4. दुर्खीम द्वारा श्रम–विभाजन को एक सामूहिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना बहुत उपयोगी है लेकिन यह मान लेना कि श्रम विभाजन निश्चित रूप से जनसंख्या वृद्धि का ही परिणाम होता है, गलत है।
5. यह मान सकना भी बहुत कठिन है कि समाज में श्रम–विभाजन बढ़ने से सामाजिक एकता में हमेशा वृद्धि होती है वर्तमान समाजों में श्रम–विभाजन में होने वाली वृद्धि के साथ सामाजिक संघर्षों में भी वृद्धि होती जा रही है।

उत्तर 19. धुरये ने जाति व्यवस्था संरचना और इससे सम्बन्धित नियमों को स्पष्ट करने के लिए जाति की अग्र छः विशेषताओं का उल्लेख किया –

(1) जाति व्यवस्था एक–दूसरे से भिन्न प्रस्थितियों और भूमिकाओं वाले अनेक समूहों या खण्डों में विभाजित होती है।

(2) जाति व्यवस्था के सभी खण्डों की सामाजिक स्थिति के बीच एक निश्चित संस्तरण होता है जिसमें ब्राह्मणों की प्रस्थिति सर्वोच्च है।

(3) विभिन्न जातियों के लिए यह आवश्यक है कि वह अपनी ही जाति में भोजन और सामाजिक सम्पर्क के सम्बन्ध स्थापित करें।

(4) जातियों की उच्चता और निम्नता के अनुसार ही उनकी नियोग्यताओं और विशेषाधिकारों का निर्धारण होता है।

(5) प्रत्येक जाति का अपना अनुवंशिक व्यवसाय होता है।

(6) प्रत्येक व्यक्ति को अपनी जाति में विवाह करना आवश्यक है।

अथवा

उत्तर – डी. पी. मुकर्जी के अनुसार परम्परा किसी समाज की संस्कृति को समझने का सबसे मुख्य आधार है। परम्परा एक सामाजिक विरासत है जिसमें उस समाज के महत्वपूर्ण विचारों, विश्वासों, मूल्यों और व्यवहार के तरीकों का समावेश होता है। उनके अनुसार परम्परा में समय की आवश्यकता के अनुसार परिवर्तन भी होता रहता है। इस परिवर्तन के कारणों के रूप में डी.पी. मुकर्जी के कुछ आन्तरिक और बाहरी दबावों का

उल्लेख किया। इसके बाद भी परम्परा में परिवर्तन होने का मुख्य कारण व्यक्ति के स्वयं के अनुभव होते हैं। बुद्ध, महावीर, चैतन्य, नानक और कबीर ने अपने अनुभव के द्वारा ही भारत की परम्परा में व्यापक परिवर्तन किए। मुकर्जी के अनुसार परम्परा से सम्बंधित व्यवहार अच्छे भी होते हैं तथा हानिकारक भी। जब हानिकारक मूल्यों में संशोधन होने लगता तब इसी को हम आधुनिकीकरण कहते हैं। जब कभी परम्परा और आधुनिकता के बीच संघर्ष की दशा पैदा होती है, तो समाज में एक नया सामंजस्य स्थापित होता है। यह दशा पहले की तुलना में अधिक उपयोगी सिद्ध होती है। इन्हीं दशाओं के आधार पर डी.पी. मुकर्जी ने परम्पराओं को समाजशास्त्र के अध्ययन में बहुत महत्वपूर्ण माना है। डी. पी. मुकर्जी ने परम्परा को परिवर्तनशील मानते हुए उसके दो कारण स्पष्ट किए (1) आंतरिक दबाव (2) बाहरी दबाव – उन्होंने आधुनिकीकाण को एक सार्वभौमिक प्रक्रिया के रूप में स्पष्ट किया तथा परम्परा और आधुनिक मूल्यों के बीच समन्वय स्थापित करने पर बल दिया।

उत्तर 20. कूले ने लिखा है कि ''प्राथमिक समूहों से मेरा अभिप्राय उन समूहों से है जिनकी मुख्य विशेषता आपने–सामने से घनिष्ठ सम्बन्ध और सहयोग की भावना है। यह व्यक्ति की सामाजिक प्रकृति और मनोवृत्तियों का निर्माण करने में प्राथमिक होते हैं। '' इस प्रकार छोटा आकार, सदस्यों के बीच शारीरिक समीपना, सम्बन्धों में स्थायित्व, सदस्यों के लक्ष्यों में समानता और प्राथमिक नियन्त्रण इन समूहों की प्रमुख विशेषताएँ है।

कूले के अनुसार द्वितीयक समूह वे हैं जिनकी विशेषताएँ प्राथमिक समूहों से भिन्न होती हैं। प्राथमिक तथा द्वितीय समूहों के बीच निम्नांकित अन्तर अधिक महत्वपूर्ण है –

(1) प्राथमिक समूह आकार में बहुत छोटे होते हैं। द्वितीयक समूहों का आकार बड़ा होता हैं।

(2) प्राथमिक समूहों के सदस्यों के बीच शारीरिक समीपता होती है। द्वितीयक समूहों के सदस्यों के सम्बन्ध अप्रत्यक्ष होते हैं।

(3) प्राथमिक समूहों की सदस्यता अनिवार्य होती हैं जबकि द्वितीयक समूहों की सदस्यता ऐच्छिक होती हैं

(4) प्राथमिक समूहों में व्यक्तियों के सम्बन्ध वैयक्तिक होते हैं तथा उनके लक्ष्यों एवं मनोवृत्तियों में समानता होती हैं। द्वितीयक समूहों में सम्बन्ध औपचारिक होने के अतिरिक्त उनके स्वार्थ एक–दूसरे से भिन्न होते हैं।

(5) अनौपचारिक नियन्त्रण प्राथमिक समूहों की विशेषता हैं। द्वितीयक समूहों में नियन्त्रण का रूप औपचारिक होता है।

(6) प्राथमिक समूह व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन को प्रभावित करते हैं तथा सदस्यों के बीच प्रत्यक्ष सहयोग पाया जाना है। दूसरी ओर द्वितीयक समूह व्यक्तित्व के रूप में छोटे से हिस्से को ही प्रभावित करते हैं तथा सदस्यों के बीच अप्रत्यक्ष सहयोग होना है।

(7) प्राथमिक समूहों का विकास स्वाभाविक रूप से होना है जबकि द्वितीयक समूह योजना बद्ध रूप से संगठित किये जाते है।

अथवा

उत्तर – टायलर के अनुसार ''संस्कृति वह जटिल सम्पूर्णता है जिसमें ज्ञान, विश्वास, कला, आचार, कानून प्रथा और इसी तरह की वे सभी क्षमताएँ और आदतें शामिल होती हैं जिन्हें मुनष्य समाज का सदस्य होने के नाते प्राप्त करता है। संस्कृति सीखा हुआ व्यवहार है। संस्कृति भौतिक भी होती है और अभौतिक भी। संस्कृति वह विशेषता है जो व्यक्ति को अपनी परिस्थितियों से अनुकूलन करना सिखाती है तथा मानव की विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा करती है। संस्कृति व्यक्ति से कहीं अधिक महत्वपूर्ण होती है। विभिन्न समाजों की संस्कृति एक–दूसरे से कुछ भिन्न होने के कारण ही विभिन्न समाजों की प्रकृति में भिन्नता देखने को मिलती है।

सामाजिक जीवन में संस्कृति की भूमिका –

(1) संस्कृति के अनुसार ही व्यक्ति का समाजीकरण होता है तथा वह अपनी सामाजिक दशाओं से अनुकूलन करना सीखता है।

(2) व्यक्तित्व का निर्माण संस्कृति के अनुसार ही होना है। इसका तात्पर्य है कि हमारे विचारों, मनोवृत्तियों, व्यवहार के ढ़ंगो शिष्टता के तरीकों आदि का निर्धारण सांस्कृतिक मूल्यों के अनुसार ही होता है।

(3) सामाजिक संगठन का निर्माण संस्थाएँ जैसे – परिवार, विवाह, लोकाचार, प्रथाएँ और सामाजिक नियन्त्रण संस्कृति से ही प्रभावित होती हैं।

(4) मैक्स वेबर ने स्पष्ट किया है कि किसी समाज की आर्थिक व्यवस्था का निर्धारण भी धार्मिक आचारों के द्वारा होता है जो संस्कृति के प्रमुख तत्व हैं।

(5) संस्कृति ही यह तय करती है कि किसी समाज में धार्मिक विश्वासों का रूप कैसा होगा।

(6) किसी समाज का धनी अथवा निर्धन होना, परम्परावादी या आधुनिक होना संस्कृति पर ही आधारित होना है।

(7) प्रौद्योगिकी की विकास भी एक समाज की संस्कृति के अनुसार ही होता है।

उत्तर 21. प्रश्नावली तथ्यों को संकलित करने की एक महत्वपूर्ण प्रविधि है। यह बहुत से प्रश्नों की एक सूची है, जिन्हें उत्तर देने के लिए संबंधित व्यक्तियों के पास डाक द्वारा भेज दिया जाता है। गुॅदे तथा हार के शब्दों में साधारण तथा प्रश्नावली का आशय प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने की एक ऐसी विधि से है जिसमें उत्तरदाता स्वयं ही एक प्रपत्र को भरकर विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ भेजता है।

प्रश्नावली अनेक प्रश्नों की सूची है। इसमें अध्ययन विषय के विभिन्न पक्षों में सम्बंधित प्रश्नों का समावेश होता है। प्रश्नावली के चार प्रकार मुख्य है – बन्द प्रश्नावली, खुली प्रश्नावली, चित्रपूर्ण प्रश्नावली, मिश्रित प्रश्नावली।

1. बन्द प्रश्नावली में प्रत्येक प्रश्न के आगे कुछ उत्तर दिए रहते हैं। उत्तरदाता को इन्हीं में से किसी एक उत्तर को चुनना होता है।
2. खुली प्रश्नावली में प्रत्येक प्रश्न के आगे कोई उत्तर नहीं होता उत्तर दाता अपनी इच्छा से प्रत्येक प्रश्न का उत्तर देने के लिए स्वतंत्र होता है।
3. चित्रपूर्ण प्रश्नावली में प्रश्न के आगे उत्तरों की जग कुछ चित्र बने होते हैं। इन चित्रों को देखकर अशिक्षित व्यक्ति भी अपनी पसन्द के उत्तर का चुनाव कर सकते है।
4. मिश्रित प्रश्नावाली में कुछ प्रश्न खुले हुए होते हैं तो कुछ बन्द प्रकृति के होते हैं। आवश्यकतानुसार इसमें प्रश्न के आगे कुछ चित्रों का भी उपयोग किया जा सकता है।

अथवा

उत्तर – किसी तथ्य को बातबीच के द्वारा समझने के स्थान पर स्वयं अपनी गहन दृष्टि से समझने की प्रक्रिया का नाम अवलोकन है।

विभिन्न समाजशास्त्रियों ने अवलोकन के अनेक प्रकारों का उल्लेख किया है। व्यावहारिक रूप से अवलोकन के चार प्रकार मुख्य हैं – सहभागी अवलोकन, असहभागी अवलोकन अर्द्ध–सहभागी अवलोकन तथा सामूहिक अवलोकन।

1. सहभागी अवलोकन – वह है जिसके अन्तर्गत अध्ययनकर्ता जिस समूह का अध्ययन करता है, स्वयं भी उस समूह का हिस्सा बनकर उसके विभिन्न व्यवहारों का अवलोकन करता रहता है।
2. असहभागी अवलोकन – वह है जिसके अन्तर्गत अध्ययनकर्ता उस समूह की क्रियाओं में कोई भाग नहीं लेता जिसका उसे अध्ययन करना होता है। वह एक तटस्थ व्यक्ति के रूप में घटनाओं का अवलोकन करता है।
3. अर्द्ध–सहभागी अवलोकन एक ऐसी विधि है जिसमें विषय की प्रकृति और आवश्यकता

के अनुसार अध्ययनकर्ता कुछ घटनाओं का अध्ययन सहभागी रूप से करता है तथा अनेक घटनाओं के अध्ययन में वह एक बाहरी व्यक्ति के रूप में समूह के व्यवहारों का अवलोकन करता है।

4. सामूहिक अवलोकन में विभिन्न विषयों के अनेक विशेषज्ञ मिल–जुलकर किसी समूह की घटनाओं और व्यवहारों का अध्ययन करते हैं। साधारणतया ऐसा अवलोकन किसी सरकारी या अर्द्ध–सरकारी संगठन द्वारा किया जाता है।